कौओं की संख्या बहुत कम हो जाए तो कोयल किसी अन्य पक्षी के घोंसले की तलाश कर सकती है। अमरीका, अफ्रीका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया वगैरह में कोयल अन्य पक्षियों के घोंसलों में अपने अण्डे रखकर आती है जिनकी परवरिश वो पक्षी करते हैं। मतलब, कोयल का ऐसा याराना कुछ अन्य पक्षियों के साथ भी है।

हमारे कुछ सवाल अनुत्तरित थे। मैंने सबसे वायदा किया कि अगले दिन मैं कोयल और कौए की इस अनोखी दोस्ती पर एक लेख लेकर आऊँगा। उसमें हमारे काफी सारे सवालों के जवाब हैं।

अगली शाम मैं अपने साथ मित्र के.आर. शर्मा के एक लेख की कुछ फोटोकॉपी करवाकर ले गया। उसे पढ़कर सभी को सन्तोष हुआ कि उनके कुछ सवालों के जवाब इस लेख में मिल रहे हैं। कुछ लोगों के लिए जैव-विकास, परजीविता जैसे शब्द नए थे। हालाँकि, हम इन पर ज़्यादा चर्चा नहीं कर पाए।

आप सभी के साथ भी के.आर. शर्मा का लेख साझा किया जा रहा है। शायद आप भी इसे पढ़कर अपने कुछ सवालों के जवाब पा सकेंगे और अन्य सवालों के जवाब तलाशने की प्रेरणा पाएँगे।

माधव केलकर: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

कौआ और कोयल: संघर्ष या सहयोग

कालू राम शर्मा

इन दिनों भरी गर्मी में कौओं को चोंच में सूखी टहनी दबाए उड़कर पेड़ों की ओर जाते देखा जा सकता है। कौओं की चहल-पहल अप्रैल से जून के बीच कुछ अधिक दिखाई देती है। अगर आप इन दिनों पेड़ों पर नज़र डालें तो दो डालियों के बीच कुछ टहनियों का बिखरा-बिखरा-सा कौए का घोंसला देखने को मिल सकता है।

पिछले दिनों मुझे मध्यप्रदेश के कुछ ज़िलों से गुज़रने का मौका मिला तो पाया कि पेड़ों पर कौओं ने बड़ी तादाद में घोंसले बनाए हैं। दिलचस्प बात यह लगी कि कौओं ने घोंसला बनाने के लिए उन पेड़ों को चुना जिनकी पत्तियाँ झड़ चुकी थीं और नई कोपलें आने वाली थीं। जब पत्तियाँ झड़ जाएँ तो पेड़ की एक-एक शाखा दिखाई देती है। जब पत्तियाँ मौजूद होती हैं तो कई पक्षी वगैरह इसमें पनाह पाते हैं मगर वे दिखते नहीं। पीपल के पेड़ पर अधिकतम घोंसले दिखाई दिए। एक ही पीपल

चित्र-1: कौए के घोंसले। कौए आम तौर पर मार्च और अप्रैल के अन्त में घोंसले बनाना शुरू करते हैं। घोंसला ज़मीन से करीब तीन-चार मीटर की ऊँचाई पर होता है।

के पेड़ पर सात से दस घोंसले भी देखने को मिले।

दरअसल, कौए ऐसे पेड़ को घोंसला बनाने के लिए चुनते हैं जिस पर घने पत्ते न हों। एक वजह यह हो सकती है कि कौए दूर से अपने घोंसले पर नज़र रख सकें या घोंसले में बैठे-बैठे दूर-दूर तक नज़रें दौड़ा सकें। घोंसला ज़मीन से करीब तीन-चार मीटर की ऊँचाई पर होता है। नर और मादा मिलकर घोंसला बनाते हैं और दोनों मिलकर अण्डों-चूज़ों की परवरिश भी करते हैं।

कहानी का रोचक हिस्सा यह है कि कौए व कोयल का प्रजनन काल लगभग एक ही होता है। इधर कौए घोंसला बनाने के लिए सूखे तिनके वगैरह एकत्र करने लगते हैं और नर व मादा का मिलन होता है, और उधर नर कोयल की कुहू-कुहू सुनाई देने लगती है। नर कोयल अपने प्रतिद्वन्द्वियों को चेताने व मादा को लुभाने के लिए तान छेड़ता है। घोंसला बनाने की जद्दोजहद से कोयल दूर ही रहती है।

कौए का घोंसला साधारण-सा दिखाई देता है। किसी को लग सकता है कि यह तो मात्र टहनियों का ढेर है। हकीकत यह है कि यह घोंसला कई हफ्तों की मेहनत का फल होता है। अण्डे देने के कोई एक महीने पहले कौए टहनियाँ एकत्र करना प्रारम्भ कर देते हैं। प्रत्येक टहनी सावधानीपूर्वक चुनी जाती है। मज़बूत टहनियों से घोंसले का आधार बनाया जाता है और फिर पतली व नरम टहनियाँ बिछाई जाती हैं। कौए के घोंसले में धातु के तारों का इस्तेमाल भी किया जाता है। ऐसा लगता है कि बढ़ते शहरीकरण के चलते टहनियों के अलावा उन्हें तार वगैरह जो भी मिल जाए, उनका इस्तेमाल कर लेते हैं।

कोयल कौए के घोंसले में अण्डे देती है। कोयल के अण्डों-बच्चों की परवरिश कौए द्वारा होना, जैव-विकास के क्रम का नतीजा है। कोयल ने कौए के साथ ऐसी जुगलबन्दी बिठाई है कि जब कौए का अण्डे देने

का वक्त आता है तब वह भी अण्डे देती है। कौआ जिसे चतुर माना जाता है, वह कोयल के अण्डों को सेता है और उन अण्डों से निकले चूज़ों की परवरिश भी करता है।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पाया है कि कोयल के पंख स्पैरो हॉक नामक पक्षी से काफी मिलते-जुलते हैं। स्पैरो हॉक जैसे पंख अन्य पक्षियों को भयभीत करने में मदद करते हैं। इसी का फायदा उठाकर कोयल कौए के घोंसले में अण्डे दे देती है। उल्लेखनीय है कि स्पैरो हॉक एक शिकारी पक्षी है जो पक्षियों व अन्य रीढ़धारी जन्तुओं का शिकार करता है। वैज्ञानिकों ने एक प्रयोग किया जिसमें नकली कोयल और नकली स्पैरो हॉक को एक गाने वाली चिड़िया के घोंसले के पास रख दिया। देखा गया कि गाने वाली चिड़िया उन दोनों से डर गई।

चित्र-2: कौआ कोयल के अण्डों को सेता है और उन अण्डों से निकले चूज़ों की परवरिश भी करता है।

परजीवी-मेज़बान का रिश्ता

तो कोयल कौए के घोंसले पर परजीवी है। कोयल माताएँ विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों के घोंसलों में अपने अण्डे देकर अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्त हो जाती हैं। कौआ माएँ कोयल के चूज़ों को अपना ही समझती हैं। आम समझ कहती है कि परजीविता में मेज़बान को ही नुकसान उठाना पड़ता है। लेकिन परजीवी पक्षियों के सम्बन्ध में हुए कई अध्ययन बताते हैं कि इस तरह के परजीवी की उपस्थिति से मेज़बान को भी फायदा होता है। तो क्या कोयल और कौए के बीच घोंसला-परजीविता का रिश्ता कौए के चूज़ों को कोई फायदा पहुँचाता है? ऐसा प्रतीत होता है कि कोयल के चूज़ों की बदौलत कौए के चूज़ों को शरीर पर आ चिपकने वाले परजीवी कीटों वगैरह से निजात मिलती है।

स्पेन के शोधकर्ताओं की एक टीम ने पाया है कि कोयल की एक प्रजाति वाकई में घोंसले में पल रहे कौओं के चूज़ों को जीवित रहने में मदद करती है। टीम बताती है कि ग्रेट स्पॉटेड कुकू द्वारा कौए के घोंसले में अण्डे दिए जाने पर कौए के अण्डों से चूज़े निकलना अधिक सफलतापूर्वक होता है। अध्ययन से पता चला कि

कैरिअन कौओं के जिन घोंसलों में कोयल ने अण्डे दिए, उनमें कौए के चूज़ों के जीवित रहने की दर कोयल-चूज़ों से रहित घोंसले से अधिक थी। और करीब से देखने पर पता चला कि कोयल के चूज़ों के पास जीवित रहने की व्यवस्था थी जो कौओं के पास नहीं होती। जिन घोंसलों में कोयल के चूज़े पनाह पा रहे थे, उन पर शिकारी बिल्ली वगैरह का हमला होने पर कोयल के चूज़े दुर्गन्ध छोड़ते हैं। यह दुर्गन्ध प्रतिकारक (रिपेलेन्ट) रसायनों के कारण होती है और शिकारी बिल्ली व पक्षियों को दूर भगाने में असरकारक साबित होती है। अर्थात् पक्षियों के बीच परजीवी-मेज़बान का रिश्ता हम आम तौर पर जो समझते हैं, उससे ज़्यादा जटिल है।

ज़रूरी है कौओं का संरक्षण

अब लोग महसूस करने लगे हैं कि पिछले बीस-पच्चीस बरसों में कौओं की तादाद घटी है। अधिकतर ऐसा एहसास लोगों को श्राद्ध पक्ष में होता है जब वे कौओं को पुरखों के रूप में आमंत्रित करना चाहते हैं। घण्टों छत पर खीर-पूड़ी का लालच दिया जाता है मगर कौए नहीं आते।

कौओं को संरक्षित करने के लिए उनके प्रजनन स्थलों को सुरक्षित रखना होगा। कोयल का मीठा संगीत सुनना है तो कौओं को बचाना होगा!

जब पक्षी घोंसला बनाते हैं तो वे सुरक्षा के तमाम पहलुओं को ध्यान में रखते हैं। पिछले दिनों मैं एक शादी के जलसे में शामिल हुआ था। बारात के जलसे में डीजे से लेकर बैंड व ढोल जैसे भारी-भरकम ध्वनि उत्पन्न करने वाले साधनों की भरमार थी। मैंने पाया कि जिन कौओं ने सड़क किनारे पेड़ों पर घोंसले बनाए थे, वे इनके कानफोड़ू शोर की वजह से असामान्य व्यवहार कर रहे थे। कौए भयभीत होकर घोंसलों से दूर जाकर काँव...काँव... की आवाज़ निकाल रहे थे। दरअसल, पक्षियों को भी, खासकर प्रजनन काल में, शोरगुल से दिक्कत होती है। इस तरह के अवलोकन तो आम हैं कि अगर पक्षियों के घोंसलों को कोई छू ले तो फिर वे उन्हें त्याग देते हैं। फोटोग्राफर के लिए भी सलाह दी जाती है कि पक्षियों के घोंसलों के बहुत नज़दीक जाकर फोटो न खींचें क्योंकि कैमरे के फ्लैश की रोशनी पक्षियों को विचलित कर सकती है।

कालू राम शर्मा (1961-2021): अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, खरगोन में कार्यरत थे। स्कूली शिक्षा पर निरन्तर लेखन किया। फोटोग्राफी में दिलचस्पी। *एकलव्य* के शुरुआती दौर में धार एवं उज्जैन के केन्द्रों को स्थापित करने एवं मालवा में विज्ञान शिक्षण को फैलाने में अहम भूमिका निभाई।

यह लेख *स्रोत* पत्रिका के अंक सितम्बर, 2019 से साभार।